BPSE 146

संघर्ष समाधान और शांति स्थापना

Important Questions for December 2024 Examination

Must Watch to Score Good Marks

PART-2

Sunday Minds

1. सापेक्ष अभाव सिद्धांत क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर:
सापेक्ष अभाव सिद्धांत (Relative Deprivation Theory) यह विचार प्रस्तुत करता है कि संघर्ष और असंतोष तब उत्पन्न होते हैं जब किसी समूह या व्यक्ति को लगता है कि वह अपने आसपास के अन्य समूहों या व्यक्तियों की तुलना में आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक दृष्टि से वंचित या असमान स्थिति में है। इस सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी को अपनी स्थिति में कोई वास्तविक कमी नहीं भी हो, लेकिन वह यह महसूस करता है कि अन्य लोग बेहतर स्थिति में हैं, तो उसे सापेक्ष अभाव का अनुभव होता है, जो उसे असंतोष और संघर्ष की ओर प्रेरित करता है।

- **मुख्य तत्व**:
  - **सापेक्ष अभाव (Relative Deprivation)**: यह तब महसूस होता है जब व्यक्ति या समूह अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं की तुलना में कम हासिल करते हैं, विशेष रूप से उन लोगों के साथ जो उन्हें समान मानते हैं।
  - **संघर्ष का कारण**: जब कोई समूह अपनी स्थिति को दूसरों से कमजोर महसूस करता है, तो यह संघर्ष, हिंसा या विद्रोह का कारण बन सकता है।
- **उदाहरण**:
  - यदि एक समाज के एक वर्ग को लगता है कि उनके पास समान अधिकार और अवसर नहीं हैं, जैसा कि अन्य वर्गों को मिलते हैं, तो यह सापेक्ष अभाव की स्थिति पैदा कर सकता है, जो सामाजिक असंतोष और संघर्ष को जन्म देता है। इस तरह के संघर्षों का उदाहरण 1960 के दशक में अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन और दक्षिण अफ्रीका में अपार्थेड के खिलाफ संघर्ष हो सकते हैं।

2. अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

उत्तर:
संयुक्त राष्ट्र (United Nations, UN) का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखना है, और इसमें इसके कई प्रमुख कार्य हैं:

- **शांति स्थापना (Peacekeeping)**:
  संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन, जैसे कि "पीसकीपिंग फोर्स" भेजने के द्वारा संघर्ष क्षेत्रों में शांति बनाए रखने का काम करता है। ये मिशन तब गठित होते हैं जब दो या दो से अधिक देश या गुटों के बीच संघर्ष हो, और संयुक्त राष्ट्र शांतिपूर्ण समाधान लाने के लिए मध्यस्थता करता है।
  - उदाहरण: 1990 में कुवैत युद्ध के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने कुवैत और इराक के बीच शांति बनाए रखने के लिए शांति सैनिक भेजे थे।
- **राजनैतिक मध्यस्थता (Political Mediation)**:
  संयुक्त राष्ट्र शांति और स्थिरता के लिए राजनैतिक समझौते और वार्ता को बढ़ावा देता है। इसके द्वारा संघर्षों में पक्षों के बीच बातचीत और सहमति स्थापित की जाती है। उदाहरण स्वरूप, संयुक्त राष्ट्र ने 1995 में बोस्निया और हर्जेगोविना में संघर्ष के बाद 'डेटन समझौते' के जरिए शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **संकट प्रबंधन (Crisis Management)**:
  संयुक्त राष्ट्र संघर्षों की पूर्ववर्ती और पश्चात स्थिति में सक्रिय होता है। यह उन देशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र की पुनर्निर्माण प्रक्रिया में भी मदद करता है, जहां युद्ध और संघर्ष की स्थिति हो चुकी होती है।
- **मानवाधिकार और विकास (Human Rights and Development)**:
  शांति की स्थिरता केवल सैन्य उपायों से ही नहीं, बल्कि मानवाधिकारों और आर्थिक एवं सामाजिक विकास से भी जुड़ी होती है। संयुक्त राष्ट्र का "यूएनडीपी" (UNDP) जैसे संगठन संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में विकासात्मक सहायता प्रदान करते हैं, जो शांति निर्माण में सहायक होता है।
- **मुख्य चुनौतियाँ**:
  - संयुक्त राष्ट्र की कार्रवाई हमेशा प्रभावी नहीं हो पाती है, खासकर तब जब सुरक्षा परिषद में प Permanent Members (P5) के बीच असहमतियाँ होती हैं, जैसे रूस, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, और फ्रांस के बीच टकराव।

3. शांति निर्माण की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर:
शांति निर्माण (Peacebuilding) एक दीर्घकालिक और स्थिर प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य संघर्ष के बाद एक स्थिर और शांति-प्रिय समाज का निर्माण करना है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **संघर्ष के मूल कारणों का समाधान**:
  शांति निर्माण का प्रमुख उद्देश्य उन कारकों को हल करना है जो संघर्षों को जन्म देते हैं, जैसे गरीबी, असमानता, मानवाधिकारों का उल्लंघन, और राजनीतिक अस्थिरता। इन कारणों के समाधान से शांति की स्थिरता संभव होती है।
- **संघर्ष से प्रभावित समुदायों का सशक्तिकरण**:
  यह प्रक्रिया स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाती है, ताकि वे खुद ही शांति और विकास में सक्रिय भागीदारी कर सकें। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **संविधान और कानूनी ढांचे का पुनर्निर्माण**:
  शांति निर्माण में मजबूत और समावेशी कानूनी ढांचे का निर्माण किया जाता है, जो सभी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करता है और न्याय सुनिश्चित करता है। न्याय प्रक्रिया की पुनर्स्थापना के साथ-साथ पूर्व संघर्षियों के लिए पुनर्वास कार्यक्रम भी शुरू किए जाते हैं।

Scholarly Minds

- **सामाजिक और सांस्कृतिक सुलह**:
  यह न केवल राजनीतिक और आर्थिक पुनर्निर्माण पर ध्यान देता है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक सुलह की भी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न समुदायों के बीच सामूहिक समझ और एकता की ओर बढ़ने का प्रयास किया जाता है।
- **दीर्घकालिक दृष्टिकोण**:
  शांति निर्माण केवल तत्काल संघर्ष को खत्म करने की कोशिश नहीं है, बल्कि यह एक स्थायी शांति के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाता है, जो न्याय, समानता, और समावेशिता पर आधारित हो।
- **संयुक्त राष्ट्र की भूमिका**:
  संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भूमिका शांति निर्माण में महत्वपूर्ण होती है। वे शांति स्थापित करने, पुनर्निर्माण कार्यक्रमों में मदद करने, और स्थानीय संगठनों के साथ साझेदारी में कार्य करते हैं।

4. संपूर्ण क्रांति से क्या तात्पर्य है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तर:
संपूर्ण क्रांति (Total Revolution) का तात्पर्य किसी समाज में मौलिक, सर्वांगीण और गहरे स्तर पर बदलाव लाने से है। यह केवल सरकार के रूप में राजनीतिक बदलाव की बात नहीं करता, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता को उजागर करता है—आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक। इसका उद्देश्य असमानताओं, अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ व्यापक संघर्ष करना होता है।

- **मूल अवधारणा**:
  संपूर्ण क्रांति की अवधारणा का प्रमुख योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता जयप्रकाश नारायण द्वारा किया गया था। उन्होंने यह विचार प्रस्तुत किया था कि केवल राजनीतिक सत्ता का परिवर्तन नहीं, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में समानता, न्याय और बुनियादी अधिकारों का उन्नयन आवश्यक है। उनके अनुसार, यह क्रांति पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को चुनौती देती है और एक नए समाज की स्थापना की ओर अग्रसर होती है।
- **मुख्य उद्देश्य**:
  - **सामाजिक न्याय**: समाज में समानता और अधिकारों की गारंटी देना, विशेष रूप से निर्धन, कमजोर और हाशिए पर रहने वाले वर्गों के लिए।
  - **राजनीतिक पुनर्गठन**: शक्ति का विकेंद्रीकरण और सशक्त लोकतांत्रिक प्रणाली की स्थापना।
  - **आर्थिक पुनर्निर्माण**: गरीबों और श्रमिक वर्ग के लिए संसाधनों और अवसरों का न्यायपूर्ण वितरण।
- **आधुनिक संदर्भ में**:
  संपूर्ण क्रांति का विचार अब भी सामाजिक आंदोलनों और आंदोलनों के भीतर प्रकट होता है, जो समग्र बदलाव की ओर अग्रसर होते हैं, जैसे "मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्ष" या "आधुनिक समाज में समानता की ओर पहलें।"
- **नकारात्मक पक्ष**:
  संपूर्ण क्रांति कभी-कभी हिंसा और अस्थिरता का कारण भी बन सकती है, क्योंकि यह संरचनात्मक बदलाव के लिए आम तौर पर सत्ता के मौजूदा केंद्रों को चुनौती देती है।

Scholarly Minds

संपूर्ण क्रांति समाज में गहरे बदलाव की प्रक्रिया है, जिसमें न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बदलावों की आवश्यकता होती है, ताकि सभी वर्गों के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए जा सकें।

Scholarly Minds